बड़ी विचित्र हूँ मैं 🌹

रूप हूँ मै आईना हूँ तेरी ही रूह हूँ और तेरा ही चित्र हूँ मै बड़ी विचित्र हूँ मै ||

धोया खंगाला तूने बहोत ही अपने मन को,तेरी ह्रदय वेदना का खामोश जिक्र हूँ मै बड़ी विचित्र हूँ मैं ||

सारी जहां की खुशियाँ तेरे साथ ही है साथी तेरी मुस्कुराहटों के पीछे दबी से फ़िक्र हूँ मै बड़ी विचित्र हूँ मैं ||

तेरी हर आह की आहट हूँ हर जन्मों की चाहत हूँ, मै उस वक़्त की रफ्तार हूँ जहाँ धड़कन भी ठहर जाये खींची चली आये रूह तेरी वो गज़ब का इत्र हूँ मैंबड़ी विचित्र हूँ मैं ||

सुप्रभा पाठक

मै कहाँ इस योग्य कान्हा ये तो तेरी कृपा है

तेरे प्रेमरस का किया रसपान भी मैंने ||

सारे कायनात में मुझे तू ही तू दीखता है

तुझे ही अपना सबकुछ लिया मान भी मैने ||

हमसे ना पूछे कोई किस रूप में क्या भाव है मेरे

तेरी रूप अनूप है कान्हा, जो भी मानु मै

तू साथ है मेरे ये लिया जान भी मैने ||

धूप है छाँव है भक्ति है भाव है तेरी

अंतर्मन का प्रेम लिया पहचान भी मैने ||

कई सदियों कई जन्मों से कुछ नाता है अपना

इस शुभ अवसर पे ले लिया वरदान भी. मैने ||

कान्हा 🙏प्रिय सुप्रभा

🌹 जमाना खराब हैं 🌹

कहते हैं लोग जमाना खराब है
कल भी जमाना हमसे था हमसे
ही आज है और कहते है लोग कि
जमाना ख़राब है ||

माना कि उलझने है चुनौती है
जिम्मेदारी है,, मरते क्या नकरते
मजबूरी है लाचारी है, अपनों को
सीखा दिया हमने अपने लिये जीना

अपनों के मारो का सीने में दफन
कितने राज़ है,लोग कहते हैं कि
जमाना खराब है ||

अपने कर्म को जरा धर्म में ढाला
होता अपने किस्मत का एक सिक्का
तो उछाला होता हमारे मरने से कोई
अनाथ नहीं होता गर अपने औलादमें
इंसानियत गपाला होता कुछ पल ही
सही किसी का घर तो उजाला होता
और कहते हैं लोग कि झूठी दुनियाँ
की झूठे जज्बात है और कहते है लोग
कि जमाना ख़राब है ||

सुप्रभा पाठक 🙏

जिसमे तू नहीं 🌹

ऐसा क्या है इस दुनिया में जिसमे तू नहीं फिर भी ये दुनियाँ मुझे वीरान लगती है ||

खुश तो है सब दुनियाँ में तेरे फिर भी क्यों दुनिया मुझे अंजान लगती है ||

खुद में ही खुद की तलाश है अपनी क्या है जिसमे मै हूँ, बस तू चाहिये पूरा होने के लिये मुझे तेरी पहचान लगती है ||

इश्क इबादत या कहूँ मोहब्बत तुझे शुक्रिया अदा करू या चुम लूं कदमो को तेरे, तेरी मोहब्बत मेरी जान लगती है ||

तन्हा ही सही दर्द ने हमें रब से मिलाया

सारी दुनियाँ में एक मुझे ही क्यों अपना बनाया, तेरी ये खूबी ही तो मुझे मेरी शान लगती है || 🌹🙏🌹

सुप्रभा पाठक

🌹 मैं ऊर्जा हूँ प्रेम की 🌹

धरती अगर है माँ तेरी,प्रकृति है दुनियां तेरी मै ऊर्जा हूँ प्रेम की प्रकृति का विस्तार हूँ ||

यहाँ -वहां इधर -उधर ढूंढता हैं बंदे तू किधर, मै तेरा ही रूप साकार हूँ ||

मै शून्य हूं समान भी मै कुछ नहीं, हूं भगवान भी आदि अंत अनंत मै तेरी सोच तेरा विचार हूं ||

हर तरफ हूँ मैं अगर,क्योंआता नहीं तुझे नजर, तेरे सोच की उपज हूँ मैं, मैं ही तेरा जीवन आधार हूँ ||❤️🙏||

सुप्रभा पाठक

ये दौलत ये शोहरत ये मस्ती के प्याले

खिलौने हैं सारे जिसे तू लुभा

ले ||

जो डूब जाते हैं भक्ति के सागर में,वो कब पुकारे कोई आके बचाले ||

ना जीना,ना मरना,नापाना,ना खोना,हम तो तुम्हारे हैं तेरे हवाले ||

कुछ कहने सुनने का सुध ही ना हो जिसको, उसे कोई कुछ भी ताना मारे

उसे हैं खबर उसको तुहि संभाले ||

सुप्रभा पाठक

ऐसा लगता है कई जन्मों से प्यासी है जिंदगी,एक तेरे मिलने से जैसे पूरी हो गयी है ||

सदियों से इंतजार था पता नहीं किसका, कान्हा तेरे आने से मै पूरी हो गयी ||

मै तो चाहे जैसी भी हरहाल ख़ुशी रहती हूँ अब अहसास हुआ तेरे होने से कस्तूरी हो गयी ||

आदत भी नहीं तेरी नशा भी नहीं था नादान थी बहोत कुछ पता भी नहीं था मै कब इतना तेरे लिये जरूरी हो गयी ||

ये सच है हमें हम से ज्यादा कोई प्यार नहीं कर सकता मेरी आत्मा है तू मै तेरी बांसुरी हो गयी ||
सुप्रभा पाठक

Created with Mi Notes

अगर तेरे नाम लेने से बेडा पार हो जाए तो उसका क्या होगा जिसको तुमसे प्यार हो जाए. तुम मेरे हो जाओ या हम तेरे हो जाए 🙏काँन्हा जी तुम जवाब हो मेरे हम तेरे होके ना कही सवाल हो जाये.❤️

दिल से प्रणाम 🙏 सुप्रभा पाठक

प्यार गुनाह है अगर तो फिर जनाब आप करते क्यों है
इश्क़ खता है ज़ालिम हो ही जाती इश्क है फिर शौक से
निभाइये छुप छुप के डरते क्यों है घुट घुट के मरते क्यों है!
इश्क वो बला है जो जान के साथ जाती है मज़ाक़ ना समझो
वरना बाद मे नाकहना मैडम फोकट मे सबको इतना ज्ञान
आप भरते क्यों हो!चार दिन की यादें तो आदत बन जाती
है उनका सोचो जो वर्षो की तम्मनाओ को वो दफ़न .फिर
करते कयों है 🙏🙏

सुप्रभा पाठक🌹

कभी

-कभी भगवान हमें किसी के लिए बुरा बना देते है ताकि लोग अच्छे लोगो की अहमियत जान सके क्योंकि हम समझदार हो कर भी अक्सर गलतफहमी के शिकार हो जाते है सावधानी अपनी कई बार अनहोनी से हमें बचा लेती है!

सुप्रभा पाठक 🌹

Created with Mi Notes

यदि हमें याद रहे कि हमसे भी बहेतर है लोग ज़माने मे तो हमको गुरुर ना होगा।

बुरा कहे कोई तो गम न कर साथी,अकेले

तो नहीं बुरे ज़माने मे सोच कर ऐसा दिल को सुकून तो होगा।🙏🙏

सुप्रभा पाठक🌹

शौक से घूमो मंदिर मस्जिद गिरिजाघर मे कॉन्ट्रेक्ट ना कर लेना रब से किसी के चक्कर मे!   वरना तुम किसी के दिल किसी का दिमाग़ का भेजा फ्राई ना हो जाये टाइमपास के चक्कर मे 🤔

सुप्रभा पाठक🌹

Created with Mi Notes

दिखा के ख्वाब मोहब्बत के ज़ब साथी
साथ नहीं होगा तो उसका ना होना मंजूर
हमें खोना बर्दास्त नहीं होगा! सीखा के
इश्क़ मे जां देना कोई हाल भी ना पूछे
अपना तो मर जाना मंजूर हमें इश्क़ पे
विश्वास नहीं होगा! जिसके लिए दम
निकले मेरा वो आके गले लगा न सके
तो दम निकले मेरा तेरे बांहो मे यैसा
अहसास कहाँ होगा|

सुप्रभा पाठक 🌹

Jan.3
2023

माफ करना बहोत मुश्किल है परन्तु प्रतिशोध कि आग मे जलने से बेहतर है! अफशोस से बचने के खुद को माफ करते रहो सुकून चाहिए तो सबको माफ करना बेहतर है|

शुभ रात्रि 🙏🙏

सुप्रभा पाठक🌹

Created with Mi Notes

नए साल को दुआओ से सजाया जाये हम तुम मिलके यादगार बनाया जाए! नया साल तो हर साल आएगा यारों हम रहे न रहे मिलके जश्न मनाया जाये!

औरो को खुशियाँ बाँट कर जो खुद को ख़ुशी मिलती है उस ख़ुशी का मजा भी अजीज होता है!

हम जितना मासूम दिलो के के करीब होते है रब हमारे करीब होता है! इस अहसास को हर दिल मे जगाया जाये! अपनी कल्पना मे पूजते है जिस खुदा को हम, एकदूसरे मे महसूस कर पाया जाये तोफा दुआओ का सबके काम मे लाया जाय 🌹🙏🙏🌹

सुप्रभा पाठक 🌹

लोग कहते है कल किसने देखा है,हमने कल को आज पे अक्सर मुस्कुराते देखा है

माना हम रहे ना रहे रूह तो अपनी होंगी ही फिर हम भूल कैसे जाते है

अपना स्वधर्म निभाने को, कल को हमने आज भी अपने इशारे पे नचाते देखा है|

कल सब कुछ होता है यारों |

सबने अक्सर लोगो को अपने कर्मो को पाते देखा है|

सुप्रभा पाठक 🙏

Jan.3
2023

उमीदे अंकुरित होने लगी है प्रभु तेरा प्रेम पाया है

लगा मन अलख जगाने स्वामी अविस्मरणीय मै आउंगी तेरे उर अंतर्मन मे दीप जलाने |.

जैसे आकाश मे चाँद तारों तारीफ करना मुश्किल है

जैसे ही प्रेम कि बातो को शब्दो मे जाहिर करना मुश्किल है | दिल सागर से भी गहरा होता है, पर कहने को तो बस एक दिल है|जीवन रूपी अभिलाषाओ को प्रेममय किरनो को अपने कर अच्छेदित अकल्पनीय खुशियाँ दी जीवन मे कर नवरस का रसधार प्रवाहित| 2022 कि हार्दिक

जब हमारा दर्द कोई बाँट नहीं सकता तो पीड़ा रूपी स्याही को कागज पे उतार लो जो अकेले है, उन्हें भी दुनिआ अपनी लगती है |

अच्छा बुरा छोड़ कर खुदा को पुकार लो मायने ये नहीं रखता हमसे किस्को प्यार है,

हमसब एक ही रब के बन्दे

सोच को सुधार के इंसानियत

सवार लो |❤️🙏🙏

सुप्रभा पाठक 🌹

Jan.3
2023

माँ तेरे ममता का अहसास तेरे आँचल में है| गोद में सर रख के ज़ब सोना चाहू करुणा भरी आवाज मन के आंगन में है |जन्नत यूं ही नहीं कहते लोग तेरे कदमो में है सीने से लगाकर सर पे हाथ फेरना वो याद मेरे रोम-रोम मेरी हर सांस मेरे हर धड़कन में है ❤️🙏🙏

. सुप्रभा पाठक

माँ हम शान तुम्हारे है मै बेटी तेरे जैसी हूं लोग कहे मै पागल हूं पर माँ पागल ही होती है धरती अंबर, प्रकृति स्वयंपर इतना जो प्यार लुटाता है थोड़ा हम भी प्यार लुटाते है तेरी हूं तेरे जैसी हूं भेदभाव ना जानू मै बेटों से दुनियां सजती बेटियां तो हर घर क़ी आंगन होती है ❤️🌹🙏

Created with Mi Notes

ज़ब रूह तेरी पूछे तुमसे मै कहां हूँ तेरे जीवन में तो समझ लेना उसे तेरी जरूरत हैं |

ज़ब खलने लगे तुम्हे हरपल अपनी ही कमी तो समझ लेना , तुम्हे रब से मोहब्बत हैं |ज़ब रात दिन गूंजे एक ही आवाज तो समझ लेना रब कोभी तू अजीज हैं उसे भी तेरी चाहत हैं |

ज़ब मन बेचैन पंछी और तन पिंजरा लगने लगे हर बंधन से मुक्त होकर उड़ना चाहे मन तो समझ लेना रब

को भी तेरी रूह से मोहब्बत हैं |

सुप्रभा पाठक🙏🙏

तेरे अंतर्मन के अँधेरे में

दीप जलाये मै ही क्यों हूं।

मिले तो हजारों होंगे तुम्हे

जीवन के सफर में राही तुम्हे।

क्या सोचा है तुमने कभी गिरते सम्भलते कदमो को तेरे जो राह दिखलाये वो मै ही क्यों हूं।

कुछ लोग पाराये भी है यहाँ जरूरी

नहीं सब अपने हों, कुछ फर्ज निभाने वालों में आखिर अकेली मै ही क्यों हूं।

ख़ुश रहना सबका हक है

आबाद रहे सबकी दुनियां

सबके अपने होते है जिसका कोई नहीं उसका तू ही तो है।

सुना है हम जैसे ही तूम्हे प्राण से प्यारे होते है अब समझ आया हमेशा तुम्हे जां से प्यारे मै ही क्यों हूं

सुप्रभा पाठक 🙏

दुनिआं में कोई किसी का होकर नहीं आता सब अपने कर्मो का हिसाब करने आते है| खास कर वो जो ऐसे जाते है कि लाख पुकारो जीतेजी वापस नहीं आते ||तो चाहिए हमें अपने कर्म मंगल कामनाओं के साथ करे ताकि हम बुरे परिणाम

के प्रभाव से सुरक्षित बच सके क्योंकि कर्म के परिणाम मिलते जरूर है ||

- [ ] ज़ब वहम टूटे तो रब को शुक्रिया अदा करो नजाने कितने लोगो कि ज़िन्दगी भ्रम में गुजर जाती है और ज़ब टूटता है तो बहोत दर्द होता है इसलिये कभी गलत हो तो आप अवश्य विचार करे और संभल जाये ||

- [ ] कब्र में पैर रखके बस अफ़सोस करोगे

ज़ब भ्रम टूटेगा तुम्हारा तब कुछ कर ना सकोगे ||

- [ ] इस कटु सत्य के लीये माफ़ी चाहूंगी ❤️🙏

- [ ] सुप्रभा पाठक

🌹 गुलाब से 🌹

चाँद कि सिफारिश में रात गुजर गयी जिसकी,दिखा भी तब ज़ब तारे थे साथ में ||

नज़र हमसे ना मिला सका ज़ालिम कही पढ़ ना लू हसरते उसके निगाह में ||

▢ जिक्र करता हैं मेरा वो हर बात में

▢ लब्ज़ कम थे मेरे तारीफ में शायद वो तारीफ में लगा रहा मेरे, गुलाब से ||महक उठा हैं मन का उपवनपता ही ना चला कब अनोखे अहसास में ||

▢ सुप्रभा पाठक ❤️🙏

▢

मै शोर हूँ सन्नाटे की

ख़ामोशी कि आवाज हूँ |

प्रेम ऐसा बंधन है जिसे बांध सका ना कोई,

प्रेम में जो उड़ गया मै वो पंछी आज़ाद हूँ ||

शून्य में समा गया उसे क्या सिकवा जहाँ से

पूर्ण हूँ मै स्वयं में, वो गुमशुदा तलाश हूँ ||

अँधेरी रात हूं मै वो जो दिन कि शुरुआत हैं

अंधकार हूँ मै कि स्वयं कि प्रकाश हूँ||

ज़ब अंत ही प्रमाण हैं नए आरम्भ की तो

अंत ही आरम्भ है उसी कि मैं आगाज हूँ ||

सुप्रभा पाठक

नादान नहीं है

ऐ जिंदगी देखा है हमने तुझे करीब से, हकीकत से हम भी तेरे अंजान नहीं हैं ||

जिन्दा हैं तो दावा करती है मेरे होने का, मेरे मर जाने से तेरी दुनियां वीरान नहीं हैं ||

गम कैसा मुझे, तुझसे दूर जाने का

रब के साथ हैं ऐ जिन्दगी तेरे बगैर हम गुमनाम नहीं हैं ||

जिंदगी होगी तू हसींन दुनियां के लिये, जरा पूछ तो ले रूह से मेरे,

मेरे लिये तू भगवान नहीं हैं ||

शुक्रिया तुझे तेरे मेहरबानी का,तेरे बदौलत दुनियादारी समझ आई समझदार हो गए हम अब नादान नहीं हैं || 🙏❤️

सुप्रभा पाठक